# POTTER'S WHEEL

Every year on the occasion of Republic Day, Independence Day and Children's Day, Department of Posts has been conducting stamp design competition at All India Level since 2015. The selected entries are awarded with the cash prizes and these entries are used in design of stamp and other philatelic items. This time Department has conducted a stamp design competition on the theme of “Potter's Wheel”. With support of 23 Circle offices across the country, Department has got wide response for this competition.

Pottery, the art of making pots out of burnt clay, is an ancient art. Pieces of pottery are inevitable parts of archeological digs all over the world. The oldest evidence of pottery dates back to 10,000 BC in Japan. The concept of clay made vessel sprung up when the society shifted from nomadic to agrarian. The society was in need for stable but heavier containers leading to the art of pottery.

Much early ceramic ware was hand-built using a simple coiling technique in which clay was rolled into long threads that were then pinched and beaten together to form the body of a vessel. In the coiling method of construction, all the energy required to form the main part of a piece is supplied indirectly by the hands of the potter. Early ceramics built by coiling were often placed on mats or large leaves to allow them to be worked more conveniently. The evidence of this lies in mat or leaf impressions left in the clay of the base of the pot. This arrangement allowed the potter to rotate the vessel during construction, rather than walk around it to add coils of clay. The earliest forms of the potter's wheel (called tourneys or slow wheels) were probably developed as an extension to this procedure. Tournettes, in use around 4500 BC in the Near East, were turned slowly by hand or by foot while coiling a pot. Only a small range of vessels were fashioned on the tournette, suggesting that it was used by a limited number of potters. The introduction of the slow wheel increased the efficiency of hand-powered pottery production.

In the mid to late 3rd millennium BC the fast wheel was developed, which operated on the flywheel principle. It utilised energy stored in the rotating mass of the heavy stone wheel itself to speed the process. This wheel was wound up and charged with energy by kicking, or pushing it around with a stick, providing a centrifugal force. The fast wheel enabled a new process of pottery-making to develop, called throwing, in which a lump of clay was placed centrally on the wheel and then squeezed, lifted and shaped as the wheel turned. The process tends to leave rings on the inside of the pot and can be used to create thinner-walled pieces and a wider variety of shapes, including stemmed vessels, so wheel-thrown pottery can be distinguished from handmade. Potters could now produce many more pots per hour, a first step towards industrialization.

On the theme “Potter's Wheel”, entries from each corner of the country were received. All the entries were carefully examined and thereafter eight entries received from Mr. Abin Bhanu, Mr. Gokul Raghavan, Ms. Sonal Kewalramani, Mr. Vysakh. K. S., Mr. M. Vaibhav Shenoy, Mr. Sanskar Verma, Mr. Abhishek P and Mr. Sumit Namdev Mandre have been selected as prize winning entries. Based on the selected entries, two stamps, a miniature sheet, a first day cover and a brochure have been designed. Five entries received from Ms. Bharati Manjari Naik, Mr. Jayasooryan S, Ms. Kumud Krishnakumar Kedia, Mr. Bandana Kumar and Ms. Malavika Sunil have also been selected and on their designs five maxim cards are also being released.

Department of Posts is pleased to issue a set of two Commemorative Postage Stamps, a miniature sheet, an FDC, a brochure and five maxim cards on Potter's Wheel on the selected entries.

**Credits:-**

| | | |
|---|---|---|
| Text | : | Philately Division, Department of Posts |
| Stamp/Miniature Sheet/ Maxim Cards/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet | : | Smt. Nenu Gupta, based on the selected entries |

# माटी और चाक

डाक विभाग, वर्ष 2015 से गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस और बाल दिवस के उपलक्ष्य में हर वर्ष अखिल भारतीय डाक-टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन करता है। चयनित प्रविष्टियों को नकद पुरस्कार दिए जाते हैं और इनका इस्तेमाल डाक-टिकट तथा अन्य फिलैटली उत्पादों के डिजाइन में भी किया जाता है। इस वर्ष, डाक विभाग ने 'माटी और चाक' विषय पर डाक-टिकट डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया। देशभर के 23 डाक सर्कल कार्यालयों के सहयोग से विभाग को इस प्रतियोगिता के लिए बड़ी संख्या में प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

मिट्टी को पका कर बर्तन बनाने की कला अत्यंत प्राचीन है। विश्वभर में पुरातात्विक उत्खनन के दौरान बर्तनों के टुकड़े अनिवार्य रूप से मिलते हैं। बर्तन बनाए जाने का प्राचीनतम प्रमाण जापान में लगभग 10,000 ई.पू. मिला। इंसानी समाज जब खानाबदोश से कृषि आधारित बना, तो मिट्टी से बर्तन बनाने की अवधारणा विकसित हुई। तब के समाज में ऐसे पात्रों की आवश्यकता महसूस हुई, जो वजन में भारी परंतु संतुलित हों। इसी जरूरत ने कुम्हारी अर्थात् पॉटरी की कला को जन्म दिया।

चाक के जन्म से बहुत पहले प्राचीन समय में, सेरेमिक के बर्तन आदि भी हाथ से तैयार किए जाते थे। ऐसा करने में कॉयलिंग तकनीक का इस्तेमाल किया जाता था। इसमें मिट्टी को लंबे धागेनुमा आकार में ढाल दिया जाता था, जिन्हें बाद में रौंदकर एवं पीटकर आवश्यकतानुसार पात्र की शक्ल दे दी जाती थी। निर्माण की इस कला में, किसी बर्तन आदि के मुख्य भाग को बनाने के लिए जरूरी ऊर्जा परोक्ष रूप से कुम्हार के हाथों से ही उत्पन्न होती थी। शुरूआत में कॉयलिंग की इस तकनीक के जरिए बनाए जाने वाले बर्तनों को चटाई या बड़े पत्तों पर रख दिया जाता था, ताकि इनको आकार देने में सहूलियत हो। इस बात के प्रमाण हमें प्राचीन बर्तनों के तले में चटाई अथवा पत्तों की छाप के रूप में मिलते हैं। बर्तनों के चटाई या पत्तों पर रखे होने के कारण, कुम्हार को निर्माण कार्य के दौरान इनके इर्द-गिर्द घूमने की बजाए इन्हें घुमा कर मिट्टी की परत चढ़ाने में काफी आसानी होती थी। चाक के शुरूआती रूप का विकास शायद इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप हुआ। प्राचीन पूर्व एशिया में लगभग 4500 ई. पूर्व के आस-पास इन शुरूआती चाकों को बर्तनों को ढालने की प्रक्रिया के दौरान हाथ अथवा पैर से मध्यम गति से चलाया जाता था। इस प्रकार के चाकों पर केवल कुछेक प्रकार के बर्तन ही बनाए जा सकते थे, जिससे यह संकेत मिलता है कि इनका इस्तेमाल कुछेक कुंभकारों द्वारा ही किया जाता था। इस मध्यम चाक के आने से हाथ से बनाए जाने वाले बर्तनों के उत्पादन की प्रक्रिया में कुशलता आई।

तीसरी सहस्त्राब्दी के उतरार्द्ध के आस-पास तेजी से चलने वाले चाक का विकास हुआ। यह चाक, चक्के के सिद्धांत पर चलता था। इस प्रकार के चाक भारी पत्थर के बने होते थे और इनके घूर्णन से ही इनकी ऊर्जा उत्पन्न होती थी, जिससे इनकी रफ्तार तेज होती थी। इस चाक को एक डंडे से तेजी से घुमा दिया जाता था, जिससे इसमें अपकेन्द्री बल पैदा होता था। तेजी से चलने वाले इस चाक ने बर्तन बनाने की नई कला को जन्म दिया। इस चाक के बीचो-बीच मिट्टी का गोला रख दिया जाता है और चलते हुए चाक पर इस मिट्टी को हाथ से दाब देकर, उठाकर अपेक्षित शक्ल में ढाल दिया जाता है। इस प्रक्रिया में बर्तनों के अंदरूनी हिस्सों में चक्राकार उभार बन जाते हैं। यही चक्राकार उभार, चाक पर निर्मित बर्तनों को हाथ से बने बर्तनों की तुलना में अलग पहचान देते हैं। इस प्रक्रिया का इस्तेमाल कम मोटाई वाले तथा सुराहीदार बर्तनों सहित विभिन्न प्रकार के पात्र बनाने के लिए किया जा सकता है। इस चाक की मदद से कुंभकारों के बर्तन बनाने की रफ्तार काफी बढ़ गई और यह औद्योगिकीकरण की दिशा में पहला कदम सिद्ध हुआ।

'माटी और चाक' विषय पर देशभर से अनेक प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी प्रविष्टियों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया गया और तत्पश्चात् आठ (8) प्रविष्टियों को पुरस्कार हेतु चुना गया। ये पुरस्कृत प्रविष्टियां मास्टर आबिन भानु, मास्टर गोकुल राघवन, सुश्री सोनल केवलरमानी, मास्टर वैशाख के.एस., मास्टर एम. वैभव शिनॉय, मास्टर संस्कार वर्मा, मास्टर अभिषेक पी. और मास्टर सुमित नामदेव मंद्रे से प्राप्त हुईं। इन चयनित प्रविष्टियों के आधार पर दो डाक-टिकट, एक मिनियेचर शीट, एक प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका तैयार की गई है। सुश्री भारती मंजरी नाईक, मास्टर जयसूर्यन एस., सुश्री कुमुद कृष्णकुमार केडिया, मास्टर बंदना कुमार और सुश्री मालविका सुनील से प्राप्त कुल 5 प्रविष्टियों का भी चयन किया गया है और इनके डिजाइन के आधार पर 5 मैक्सिम कार्ड जारी किए जा रहे हैं।

डाक विभाग, 'माटी और चाक' विषय पर, चयनित प्रविष्टियों के आधार पर दो स्मारक डाक-टिकटों का सेट, एक मिनियेचर शीट, प्रथम दिवस आवरण, सूचना विवरणिका और 5 मैक्सिम कार्ड जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।


**आभार:-**

| | | |
|---|---|---|
| मूलपाठ | : | फिलैटली संभाग, डाक विभाग |
| डाक टिकट/मिनियेचर शीट/मैक्सिम काड्र्स/ प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण | : | श्रीमती नीनू गुप्ता, चयनित प्रविष्टियों पर आधारित |


तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग<br>Denomination | : | 1500 पैसा, 500 पैसा<br>1500 p, 500 p |
| मुद्रित डाक टिकटें<br>Stamps Printed | : | 5.0 लाख प्रत्येक<br>5.0 lakh each |
| मुद्रित मिनियेचर शीट<br>Miniature Sheet Printed | : | 1.10 लाख प्रत्येक<br>1.10 lakh each |
| मुद्रित मैक्सिम काड्र्स<br>Maxim Cards Printed | : | 1000 प्रत्येक<br>1000 each |
| मुद्रण प्रक्रिया<br>Printing Process | : | वेट ऑफसेट<br>Wet Offset |
| मुद्रक<br>Printer | : | प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद<br>Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्य ₹ 5.00